अस्हाबे कहफ का वाकया

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू [अल्लाह के नेक बंदो की करामत] से एक हिस्से का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

सूरे कहफ आयत नम्बर १६,१७ मे अल्लाह ने एक और जगह पर अस्हाबे कहफ के किस्से की तरफ इशारा किया हे जिस्का तर्जुमा ये हे अस्हाबे कहफ के कुछ नवजवान थे जो अपनी कौम से हटकर अल्लाह की इबादत तरफ मुतवज्जह हूवे.

ये किस्सा हजरत इसा (अल) की बेअसत के बाद और नबी करीम ﷺ की विलादत से पेहले के दरमीयान के ज़माने का हे उन्का बादशाह दकतयानूस बडा ज़ालिम और बुतपरस्त था अपने जुल्म और ज़ियादती के ज़रीया हर एक को बुत परस्ती के लिये मजबूर करता था उस वजह से पूरी कौम बुतपरस्त थी उन्का एक सालाना मेला होता

था जिस्मे सब लोग बस्ती से बाहर जाते थे और खूशीया मनाते थे और अपने बुतो को राज़ी करने के लिये उन्की पूजा भी करते थे चुनान्चे उसी मेले और तेवहार के रोझ सब लोग बाहर मेदान मे गये हूवे थे और बुतो को राज़ी करने मे मश्गूल थे ऐन उसी वकत उसी कौम के चन्द नवजवानो के दिल मे अल्लाह ने ये बात डाली के हमारी कौम ये कया कर रही हे जिन बुतो को अपने से तराशा और बनाया उस्की इबादत कर रही हे और उसीको मअबूद बना रही हे चुनान्चे जब वो सब पूजा के अन्दर मशगूल थे उसी दौरान उन्मे से एक नवजवान वहा से हटकर सब्से अलग होकर एक दरख्त के नीचे जाकर बेठ गया, दूसरे के दिलमे भी अल्लाह ने यही बात डाली वो भी उसी तरह वहा आकर बैठा, तीसरा, चोथा, पांचवा, छठा, सब उसी तरह आकर वहा बेठे उन्मे से कोयी किसी को

पहचान्ता नही था अल्लाह ने हर एक के दिलमे यही बात डाली और हर एक उसी तरह अपनी कौम के इन करतूत और बुत परस्ती से बददिल और मुतान्फफीर होकर उन्से हटकर उसी दरख्त के निचे आया.

अब हर एक अपनी जगाह पर खामोश बैठा हूवा था और चुके बादशाह बडा ज़ालिम था अगर उस्को पता चल जाता के ये लोग बुतपरस्ती से नफरत करते हे और उस्से अलग हो गये हे तो उस्की तरफ से सज़ा मिले बल्के जान जाने का अन्देशा था और उन्मे से हर एक को यही खतरा था के कही एसा न हो के कोयी दूसरा मेरी हालत के मुताल्लीक उस्को इत्तेला करदे हर एक यही सोच रहा था के पता नही ये कौन हे इस्लीये सब खामोश बेठे रहे बहुत देर तक खामोशी वाली केफीयत रही उस्के बाद उन्मे से एक ने कहा हम कब से यहा आकर बेठे हे कोयी कुछ नही

बोलता चलो हम आपस मे बातचीत करे.

उन्मे से एक ने कहा हमारी कौम जो कर रही हे उस्के मुताल्लीक मेरे दिल मे ये आता हे के वो कोयी अच्छा काम नही कर रही हे जिन बुतो को उन्होने अपने हाथो से तराशा उन्ही की पूजा और इबादत मे मश्गूल हे ये तो बिलकुल गलत हरकत हे दुसरो ने कहा हम भी इसी जज़्बे से उन्से अलग हो कर यहा आये हे बस इतनी ही बातचीत से सब्के खियालात नुमाया हो गये के हम सब एक ही खियाल के हे और एक ही जज़्बा दिल मे पैदा हूवा हे इस्सीलिये अलग हुवे हे इस्लीये हमें उन सब्से अलग होकर अल्लाह की इबादत मे मशगूल होना चाहिये.

एक जगह मुकर्रर करके वो सब अल्लाह की इबादत मे मशगूल हो गये उन्के हाल की इत्तेला बादशाह को

हो गयी के कुछ नवजवान ऐसे हे जो हमारे दीन से अलग हो गये हे और हमारी बुतपरस्ती को अच्छी निगाह से नही देखते, चुनान्चे बादशाह ने उन्को दरबार मे बुलाया और उन्से पूछा, अल्लाह ने इन्को हिम्मत दी और उन्होने बादशाह के सामने हक्का इज़हार कर दिया के तुम जो कुछ कर रहे हो वो बिलकुल गलत हे बादशाह ने जब उन्की बात सुनी तो बहुत गुस्सा हूवा और उन्को सज़ा देने का इरादा किया लेकिन चूके वो भी अपनी कौम के बडे लोगो की औलाद मेसे थे इस्लीये बादशाह ने फौरी तौर पर इन्को सज़ा नही दी बल्के उन्का शरीफाना लिबास उतरवा दिया और कहा के तुम लोगो को सोचने के लिये कुछ वकत दिया जाता हे ताके अपने इस इरादा से बाज़ आजावो और कौम पेहले से जो कर रही हे उसीमे सब्के साथ शरीक रहो अगर तुम अपने उस नये

नज़रीया से बाज़ नही आये तो फिर मे तुम सब को कत्ल कर दून्गा.

जब उन्को कुछ मोहलत मिली तो आपस मे मशवरा करने लगे और एक दूसरे से केहने लगे के जब हम इन लोगो से और जिस चीझ की ये पूजा करते हे हम अलग हो गये हे और एक अल्लाह ही की इबादत मे मशगूल हे उन्के अकाइद और आमाल से हमारा कोयी ताल्लुक नही हे तो फिर हमे चाहिये के इन्के दरमीयान रहने के बजाये किसी गार मे जाकर पनाह ले वहा अल्लाह हमारे लिये अपनी रहमत फेलायेगा और आसानी का कोयी इन्तेज़ाम कर देगा चुनान्चे ये मशवरा करके वो लोग आबादी छोड कर एक गार मे जाकर ठहेर गये और अल्लाह ने उस गार वाली कियाम गाह को लोगो के उपर मख्फी रख-का.

फिर जब वे लोग लेटे तो अल्लाह ने उन्के उपर नीन्द

तारी करदी और उसी नीदमे वो तीनसो साल तक सोते रहे ये उन्की करामत थी के, तीनसो साल नीन्द मे रहने के बावजूद उनपर कोयी असर नही हूवा जैसे तन्दरूस्त थे वैसे ही रहे कुदरती तौर पर वो करवटे भी बदलते रहते और उन्के लिबास पर भी कोयी फर्क नही आया और अल्लाह ने उस गार मे कुदरती तौर पर एसा इन्तेज़ाम कर दिया के वहा हवा और रोशनी की आमदो रफत भी थी लेकिन धूप अन्दर नही जा सकती थी वो गार उस अन्दाज़ से बना हूवा था के सुबह मे जब धूप निकलती तो इन्के गार से टकरा कर दाये तरफ निकल जाती और शाम को गुरूब के वकत बाये तरफ होकर निकल जाती थी मतलब ये हे के गार शुमालन और यमीनन एसा बना हूवा था के सूरज के तुलू और गुरूब के वकत भी धूप अन्दर नही पहुच सकती थी हा रोशनी और हवा पूरे तौर

पर आती जाती थी अल्लाह की तरफ से उन्के लिये बतौरे करामत ये इन्तेज़ाम किया गया था.

वो तो सोते रहे और यहा बादशाह ने उन्को बहुत तलाश करवाया लेकिन अल्लाह ने उस गार वाली जगह को ऐसी छूपी रख-की के बहुत धूंध ने के बाद भी इन्का कोयी पता नही चला पाया तो बादशाह ने उन्के नाम सीसा की एक तख्ती पर लिख-वा कर अपने खज़ाने मे महफूज़ कर लिये के इस नाम के कुछ नवजवान हे जिन्के ऐसे ऐसे हालात हे वो अचानक ऐसे गायब हो गये के उन्का पता ही नही चला.

तीनसो साल के बाद वहा के हालात मे बहुत कुछ इन्कीलाब आ-चुका था अल्लाह ने वहा के लोगो को हक इख्तीयार करने की तौफीक अता फरमायी और तीनसो साल के अरसे मे वहा पर सब ही दीने हक

पर काइम हो गये उस वकत वहा जो बादशाह था वो भी एहले हक ही मे से था उस ज़माने मे एक चर्चा और बहस

ये छिड गयी के मरने के बाद दोबारा ज़िन्दगी नसीब होगी या नही.

एहले हक मे से होने की बावजूद बाज़ ये केहते थे के हा दोबारा ज़िन्दगी होगी और बाज़ केहते थे के दोबारा ज़िन्दगी कैसी आदमी जब मर जायेगा और गल-सड जायेगा उस्का जिस्म मिट्टीमे मिल जायेगा तो वो दोबारा पैदा कैसे होगा अब जो लोग इन्कार करते थे वो केहते थे के अगर दोबारा ज़िन्दगी हे तो दलील से हमे समझावो और दलील से समझाने के बाद भी बात उन्की समझ मे नही आती थी बादशाह भी बडा फिकर मे था के इन्को कैसे समझाया जाये.

रिवायतों मे हे के वो अल्लाह के हुज़ूर मे बहुत गिडगिडाता था टाट का लिबास पहेन कर तन्हाइ

मे जाकर रो-रो कर अल्लाह से दुवा मान्गता था के कोयी ऐसी शकल पैदा हो जाये के जो लोग दोबारा ज़िन्दगी होने का इन्कार करते हे उन्की समझ मे बात आजाये.

उधर उन लोगो को सोये हूवे तीनसो साल पूरे हो चुके थे अल्लाह ने जब उन्की आंख खोली तो उन्को भूख का एहसास हूवा उन्होने आपस मे मशवरा किया के किसी एक आदमी को बस्ती मे भेजो ताके वो जाकर सब्के लिये खाना ले आये और देखो जरा छुप छुपा कर जाना चुनान्चे एक आदमी पैसे लेकर बाज़ार पहुन्चा जब वो दुकान पर पहुन्चा और उस्ने सिक्का दिया तो दुकानदार ने कहा ये सिक्का कहा से लाये दुकानदार यू समझा के उस्को पुराने ज़माने का कोयी खज़ाना मिला होगा उस्ने दूसरे दुकानदारो को जमा किया और सब्ने उस्को पकड लिया धिरे-धिरे ये

बात उस वकत के बादशाह तक पहुन्ची. बादशाह ने उस्से अपने पास बुलाकर तमाम हालात से आगाही चाही उस्ने सब कुछ बता दिया के हमारा एसा-एसा मामला हे तो बादशाह उस्के साथ तमाम लोगो को लेकर गार पर पहुन्चा और उन सब्से मुलाकात ली, ये वाकिया देखकर गोया अब तो सब लोगो को ये बात समझ मे आ गयी के जब अल्लाह इन्को तीनसो साल तक इस तरह सुलाये रखने और ज़िन्दगी को बाकी रखने पर कादिर हे तो वो मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करने पर भी कादिर हे.

रिवायतों मे आता हे के बादशाह के उन्से मुलाकात करने के बाद अल्लाह ने उन्को मौत अता फरमायी ये उन्की करामत थी.